दृढ़ विश्वास

पतरस ने यहूदी लोगों को निर्देश देने के बाद (प्रेरितों 2:14-36), उनके मनों को छुआ (प्रेरितों 2:37) और उन्हें बताया कि उद्धार पाने के लिए ज़्या करना है (प्रेरितों 2:38), फिर उसने उन्हें वचन को मानने के उनके दृढ़ विश्वास की इच्छा की आवश्यकता बताई (प्रेरितों 2:40)। यीशु की इच्छा को मानने की इच्छा करना लोगों को मसीह में लाने का एक महत्वपूर्ण भाग है।

दृढ़ विश्वास में व्यज़्ति को अपने दिमाग़ से परमेश्वर के वचन के उचित जवाब की आवश्यकता को समझने में सहायता करना भी शामिल होना चाहिए। यह अपनी इच्छा को मनवाने के लिए ज़बर्दस्ती करने का प्रयास नहीं होना चाहिए।

सिखाने वाले को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सीखने वाला सच्चाई की बात मानने की इच्छा करने से पहले उद्धार से जुड़ी सच्चाई को समझता है। सीखने वाले को आज्ञा मानने और न मानने के परिणामों का अहसास हो जाना चाहिए।

सीखने वाला यदि इन बातों को समझ जाता है तो सिखाने वाले को चाहिए कि तुरन्त स्वीकार करने के महत्व की ओर ध्यान दिलाए। सिखाने वाला पूछ सकता है कि ज़्या उसे सुसमाचार की आज्ञा मानने के इस समय से अधिक उपयुज़्त समय है। इसी समय आज्ञा मानने के लाभ बताए जा सकते हैं:

1. यदि आप परमेश्वर की आज्ञा को मानते हैं तो वह आपके जीवन में काम करेगा।
2. परमेश्वर अपनी संतान की तरह मसीही जीवन बिताने में आपकी सहायता के लिए आप पर अपना आत्मा भेजेगा (गला. 4:6; इफि. 3:16)।
3. आप परमेश्वर के अच्छे परिवार के एक भाग बन जाएं।
4. आपसे प्रेम करने वाला कोई भी व्यज़्ति इस बात से खुश होगा कि आपने परमेश्वर की बात मान ली है। परमेश्वर आनन्दित होगा, यीशु आनन्दित होगा, पवित्र आत्मा आनन्दित होगा, स्वर्गदूत आनन्द करेंगे, मसीही लोग आनन्दित होंगे और आप स्वयं भी आनन्दित होंगे (प्रेरितों 8:39)।
5. आप पाप पर अपनी चिंता बंद कर देंगे और आपको अपने पाप पर विजय पाने में सहायता मिलेगी।
6. साथी मसीही लोग एक मसीही के रूप में और मसीही जीवन बिताने में आपकी सहायता करेंगे, आप अपने जीवन और शिक्षा से दूसरों की सहायता कर पाएंगे।
7. जीवन का कोई पता नहीं कि आपके प्राण कब निकल जाएं। आपके पास केवल

यही समय है जिसमें आप निश्चिंत होकर निर्णय ले सकते हैं।

8. आज्ञा मानने के पुरस्कार का आनन्द पाने के लिए अनन्तकाल एक लज़्बा समय है, परन्तु दण्ड का समय भी उतना ही लज़्बा है।

9. यीशु दोबारा किसी भी समय आ सकता है। हमें हर समय उसके आने के लिए तैयार रहना चाहिए (मत्ती 24:42-46)।

10. आज्ञा मानने की प्रतीक्षा करके कुछ भी नहीं पाया जा सकता, इसके बजाय प्रतीक्षा करके हम सब कुछ खो सकते हैं।

11. आपको अंदरूनी शांति मिलेगी जिसे संसार आपसे छीन नहीं सकता।

12. आप व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर के साथ उसके निकट होकर चल सकते हैं।

यदि सीखने वाला उसे मिलने वाले इन बारह लाभों पर कोई टिप्पणी नहीं देता, तो उसे पूछें कि वह देरी क्यों कर रहा है। सिखाने वाला पूछ सकता है कि क्या उसके मन में सुसमाचार की आज्ञा मानने के वर्तमान समय से अच्छा समय है। उसकी किसी भी आपत्ति का जवाब बड़े धीरज से दें। यदि वह थोड़ा इंतज़ार करना चाहता है, तो उसे पूछें कि आज्ञा मानने के लिए उसे कौन सा समय अच्छा लगता है। उसे बताएं कि आप चाहते हैं कि वह सुसमाचार को ग्रहण करने के लिए इसकी आज्ञा मान ले क्योंकि वह आपकी इच्छा को नहीं मान रहा है बल्कि हमारे अनुग्रहकारी, दयालु, करुणामय परमेश्वर के प्रेम को पाना चाहता है।

उससे पूछें कि यदि आप और कोई और उसे प्रार्थनाओं में याद रखे तो उसे कोई अपत्ति तो नहीं होगी। उसे बताएं कि आप उससे प्रेम करते हैं और ये सुनिश्चित करना चाहते हैं कि वह आपके साथ स्वर्ग में परमेश्वर के साथ अनन्तकाल तक रहे। यदि वह अभी भी सुसमाचार को मानने से पहले थोड़ा इंतजार करना चाहता है, तो उसे अध्ययन के लिए उसके साथ समय ठहराएं।